# बी.ए. प्रथम वर्ष–हिन्दी साहित्य (प्रथम पत्र)
## भक्तिकालीन साहित्य

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

(क) दुलहनि गावहुँ मंगलाचार।
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।।
तन रत करि मैं मनरत करि हूँ पंचतत बराती।
रामदेव मौरे पाहुँने आये मैं जोवन मैं माती।।
सरीर सरोवर वेदी करि हूँ, ब्रह्मावेद उचार।
रामदेव संगि भाँवरी लैहूं, धनि धनि भाग हमार।।
सुर तेतीसूं कौतिग आये मुनिवर सहस अठ्यासी।
कहै कबीर हम बयाहि चले हैं, पुरूष एक अविनासी।।

(ख) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन, क्रम वच नन्द–नन्दन उर यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्पप्न दिवस–निसि, कान्ह कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसो, ज्यों करूई ककरी।
सु तौ ब्याधि, हमको लै आये, देखी सुनी न करी।।
यह तौ 'सूर' तिन्हहिं ले सौपो, जिनके मन चकरी।।

(ग) रानी मैं जानी अयानी महा, पवि पाहन हूँ ते कठोर हियो है।
राजहुँ काज अकाजु न जान्यो, कह्यो तिय को जेहि कानि कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ऐ, विछुरें कैसे प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में सखि! राखिवे जोगु, उन्हें किनि कै बनवासु दियो है।।

(घ) नव पौरी पर दसव दुबारा । तेहि पर वाज राज – वरियारा।।
घरी सौ बैठे गनै घरियारी। पहर–पहर सो अपनि बारी।।
जबहि घरी पूजि देई मारा। घरी–घरी हरियार पुकारा।
परा जो डांड जगत सब डांडा। का निचिंत मारी कर भांडा।।
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ कांचे। आएहु रहे न थिर होई बांचे।
घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ। का निचिंत होइ तोउ बटाऊ।।
पहरहि पहर गजर नित होई। हिया बजर, मन जाग न सोई।।
मुहम्मद जीवन जल भरन, रहट हरी के रीति।
हरी जो आई ज्यों भरी, ढरी जनम गा बीति।।

2. कबीर मध्यकालीन क्रान्तिपुरुष थे।" कथन की सत्यता पर प्रकाश डालते हुए इसकी प्रासंगिकता बताइए।

अथवा

"जायसी का प्रेम वर्णन लौकिक पक्ष से अलौकिक पक्ष की ओर संकेत करता है।" 'पदमावत' के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3 "सूरदास श्रृंगार और वात्सल्य का कोना–कोना झांक आये हैं।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

तुलसी की भक्ति भावना की विशेषताओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. 'रसखान' की प्रेमभक्ति की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

अथवा

मीरा की भक्ति भावना पर प्रकाश डालते हुए सिद्ध कीजिए कि उनके पदों में माधुर्य भाव की अनन्यता है।

5. काव्यगुण किसे कहते हैं? स्पष्ट करते हुए प्रसादगुण की व्याख्या कीजिए।

अथवा

यमक और श्लेष अलंकार के भेद को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

6. शब्द–शक्ति कितने प्रकार की होती है? अर्थ व उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

संदेह और भ्रांतिमान अलंकार में सोदाहरण अंतर बताइये।

7. भक्तिकाल की प्रेरक परिस्थितियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

अथवा

निर्गुण काव्यधारा की उदाहरण सहित प्रवृत्तियाँ लिखिए।

8. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाखा। करहिं हुलास देखि कै साखा।।
भोर होत बोलहिं चुह–चुही । बोलहिं पांडुक एकै तूही।।
सारो सुआ जो रहचह करही । कुरहि पेखा औ कर बरहीं।।
'पीव–पीव' कर लाग पपीहा। 'तुही–तुही' कर गडुरी जीहा।।
'कुहू–कुहू' करि कोइल राखा । औ भिंगराज बोलहुँ बहुभाखा।।
'दही–दही' करि महरि पुकारा । हरिल बिनबै आपन हारा।।
कुहुकहि मोर सोहावन लागा । होई कुराहर बोलहिं कागा।।
जावत पंखी जगत के, भरि बैठे अगराउँ।
आपनि आपनि भाषा, लेहिं दई कर नाउँ।।

(ख) अबकै राखि लेहू भगवान।
अब अनाथ बैठ्यो द्रुम डरिया, परिधि साँधे बान।।
ताकै डर भागा चाहत हौं, ऊपर दुक्यो सचान।
दुँहु भांति दुःख भयो आमि यह, कौन उबारै प्रान।
सुमिरत ही अहि उस्यो पारधी, सर छूटै संधान।
'सूरदास' सर लग्यो सचानहिं, जय–जय कृपा निधान।

(ग) प्रान वही जु रहे रिझि वा पर, रूप वही जिहि वाहि रिझायो।
सीस वही जिहि वे परसे पग, अंग वही जिहि वा परसायो।।
दूध वही जु दुहायो रि बाने, दही सु वही जु वही ढुरकायो ।
और कहाँ लौ, कहौं रसखानि, सुभाव वही जु वही मन भायो।।

(घ) राम नाम रस पीजे, मनुआ राम नाम रस पीजे।
तजि कुसंग सतसंग बैठि नित, हरि चरचा सुण लीजे।।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूं चित्त से बहाय दीजे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजे।।

9. 'रसखान' की काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

अथवा

'भक्तिकाल के कवियों में तुलसीदास का सर्वोच्च स्थान है।' इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिये।

10. सूरदास की काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

जायसी कृत सिंहलदीप का विस्तृत वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

11. तुलसीदास की समन्वय साधना पर एक निबन्ध लिखिए।

अथवा

सूरदासकृत भ्रमर–गीत प्रेम और विरह का काव्य है। व्याख्या कीजिए।

12. उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार को स्पष्ट करते हुए इनके भेद बताइये।

अथवा

अनुप्रास अलंकार के भेद सोदाहरण समझाइये।

13. व्यंजना और लक्षणा शब्द–शक्ति को सोदाहरण अन्तर की दृष्टि से स्पष्ट कीजिए।

अथवा

माधुर्य एवं ओज गुण को सोदाहरण अन्तर की दृष्टि से स्पष्ट कीजिए।

14. भक्तिकाल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

अथवा

भक्तिकाल की काव्य–धाराओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।

# बी.ए. प्रथम वर्ष–हिन्दी साहित्य (द्वितीय पत्र)

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

(अ) आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गये, पर शहरी गाड़ियों से उठने वाली धूल के बादल कई दिनों तक मंडराते रहे। नेताओं ने गीली आंखों और रूँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े–बड़े आश्वासन दिये। अखबार नबीस आये तो दनादन तो उस शस्त्र के ढेर की ही फोटो खींच कर ले गये। दूसरे दिन अखबार में छाप कर घर–घर पहुँचा भी दिया –इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी की अंगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुःख से लिपट कर निकला–'ओह हॉरिबल.....सिम्पली इनह्यूमन। कब तक यह सब चलता रहेगा? त्.....त्.....। और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँव वालों की जिन्दगी की तरह अखबार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।'

(ब) मजमा ठीक ही जुट गया का भाव चेहरे पर संतोष की हलकी–सी परत पोत गया। बस सारा आयोजन शांति से हो जाये और उसकी बात लोगों तक पहुँच जाये। इस घटना से लोगों के दिमाग उस जमीन जैसे हो रहे होंगे जो वर्षा के स्पर्श मात्र से फूट पड़ने को तैयार रहती है। आज वे ऐसी वर्षा करके जायेंगे कि फसल उनके हिस्से में ही पड़े। मन ही मन उन्होंने अपनी उँगली में पड़े नीलम को प्रणाम किया और मत चूके चौहान के भाव से माइक संभाल लिया।

(स) यह लड़का उसकी समझ से बाहर होता जा रहा है, कभी लड़के जैसा रहता नहीं, मानो एकदम बूढ़ा–बुजुर्ग हो। तब वह डर जाती है, जैसे उस पर पछ्तावा हो और उस समय बुजुर्ग से बात छेड़ने का उपाय भी नहीं रह जाता। उसमें सहसा मातृ–भावना उमड़ पड़ती है, पर उसके प्रकाशन का कोई कारण नहीं मिल पाता। परिणामतः उठी सहानुभूति रोष बन जाती है।

(द) भय से चीखकर ओट में जाने के लिए भागती हुई औरतों पर दया कर भीड़ छंट गयी। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया तो ड्योढ़ी का पर्दा आंगन के सामने पड़ा था परन्तु उसे उठाकर फिर से लटकाने की सामर्थ्य उनमें शेष न थी। शायद अब इसकी आवश्यकता भी न रही थी। पर्दा जिस भावना का अवलम्ब या वह मर चुकी थी।

2. मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'महाभोज' उपन्यास की भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3. मन्नू भंडारी द्वारा रचित उपन्यास 'महाभोज' के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए इसकी तात्विक समीक्षा कीजिए।
4. 'ममता' कहानी की नायिका की चारित्रक विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।
5. ''पंचलाइट' गांव के सामाजिक जीवन के बदलाव की कहानी है। 'कथन की समीक्षा कीजिए।
6. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में सामाजिक जड़ता एवं निष्क्रियता का सुन्दर चित्रण हुआ है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दी उपन्यास के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

7. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

(अ) बिन्दा की आंखों में फिर कुछ दहकने लगा और कनपटी की नसें फड़कने लगी, 'क्योंकि वह जिन्दा था। जिन्दा रहने का मतलब समझते हैं न आप? लोग भूल गये हैं, जिन्दा रहने का मतलब, इसलिये पूछ रहा हूं।" एक क्षण रूका बिन्दा। सक्सेना एक टक उसका चेहरा देख रहे थे। उसके आवेश को देखते रहे और बिन्दा उसी रौब में कहता रहा–'और जो जिन्दा हैं, कुत्ते की मौत। जैसे बिसू को मार दिया गया, सोच–सोच कर ही दिमाग की नसें फटने लगती हैं।" और सचमुच ही बिन्दा ने दोनों हाथों से कसकस अपना सिर पकड़ लिया।"

(ब) आज तक वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े–टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गये हैं, पर जैसे ही गोलियां चली हैं, उसे वहीं पर छोड़कर भाग आये हैं।

(स) "शायद से निकालो तो तकरीबन में डाल दो और तकरीबन से निकालो तो शायद में गर्क कर दो। यही तुम्हारी दफ्तरी तालीम है। तकरीबन तीन–चार महीने में तहकीकात होगी। शायद महीने–दो महीने में रिपोर्ट आयेगी। मैं आज शायद और तकरीबन दोनों ही घर पर छोड़ आया हूं। मैं यहां हूं और मेरा काम अभी होगा। तुम्हारे शायद और तकरीबन के ग्राहक ये सब खड़े हैं। ये ठगी इनसे करो.....।"

(द) उसे लगने लगा था जैसे कुछ है, जो पकड़ में नहीं आ रहा है, जो हाथों से छूटता जा रहा है, कहीं कुछ फूट पड़ा है जो काबू में नहीं आ रहा है। तमी वह चुपचाप और लोगों के तर्क सुनने लगा था, सभी पक्षों के, मतों को सुनता रहता और केवल सिर हिला कर रह जाता। उसकी अवधारणा कहीं जमने भी लगती तो तर्क–कुतर्क के एक ही थपेड़े में वह बालू के रेत की भीत की तरह ढह जाती थी।"

8. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालिये।
9. सिद्ध कीजिए कि महाभोज उपन्यास राजनीति बोध का उपन्यास है।
10. मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी 'गुल्ली डण्डा' के कथानक पर सोदेश्य प्रकाश डालिये।
11. 'बर्डे' कहानी वेतनभोगी मध्यम वर्गीय लोगों के खोखले व्यवहार पर एक तीखा व्यंग्य है। इस कथन को स्पष्ट करते हुए श्रीमती बैजल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
12. कहानी और उपन्यास में अन्तर बताते हुए सिद्ध कीजिए कि तात्त्विक दृष्टि से दोनों पूर्णतः भिन्न विधाएं हैं।

(अथवा)

'बिरादरी बाहर' कहानी की मूल संवेदना पर टिप्पणी लिखिये।